राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 1] चौदहवीं विधान सभा के पहले सत्र का दूसरा दिवस [संख्या : 2

बुधवार,

22 जनवरी, 2014

(राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे राजस्थान विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।)

(श्री प्रद्युम्न सिंह, अस्थायी अध्यक्ष, पदासीन)

श्री अध्यक्ष: शपथ/प्रतिज्ञान।

शपथ/प्रतिज्ञान

नव-निर्वाचित सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण/प्रतिज्ञान

(माननीय सदस्यों ने उनके नाम के सम्मुख अंकित भाषा में शपथ ग्रहण की/प्रतिज्ञान किया।)

क्र.सं.	सदस्य का नाम	शपथ/प्रतिज्ञान	भाषा
	(माननीय सदस्यों द्वारा पूर्व शपथ ग्रहण/प्रतिज्ञान से क्रमवार)		
144.	श्री ओम बिरला (कोटा दक्षिण)	शपथ	हिन्दी
	श्री कुंजीलाल (बामनवास)	(अनुपस्थित)	
	श्री बी. एल. कुशवाह (धौलपुर)	(अनुपस्थित)	
	श्री भंवरलाल (सरदारशहर)	(अनुपस्थित)	
	म. रणधीर सिंह भीण्डर (वल्लभनगर)	(अनुपस्थित)	
145.	श्री राजपाल सिंह शेखावत (झोटवाड़ा)	शपथ	हिन्दी
	श्रीमती रानी सिलौटिया (बसेड़ी)	(अनुपस्थित)	
146.	डा. रामप्रताप (हनुमानगढ़)	शपथ	हिन्दी
147.	श्री रामलाल शर्मा (चौमूं)	शपथ	हिन्दी
148.	श्री रामहेत सिंह यादव (किशनगढ़ बास)	शपथ	हिन्दी
	श्री रामेश्वर लाल डूडी (नोखा)	(अनुपस्थित)	
149.	श्री राव राजेन्द्र सिंह (शाहपुरा)	शपथ	हिन्दी
150.	श्री लक्ष्मीनारायण बैरवा (चाकसू)	शपथ	हिन्दी

क्र.सं.	सदस्य का नाम	शपथ/प्रतिज्ञान	भाषा
151.	श्री ललित कुमार (किशनगंज)	शपथ	हिन्दी
152.	श्री लादूराम (गुढामालानी)	शपथ	हिन्दी
153.	श्री वासुदेव देवनानी (अजमेर उत्तर)	शपथ	संस्कृत
154.	श्री विजय बंसल (पप्पू बन्डा) (भरतपुर)	शपथ	हिन्दी
	श्री विजय सिंह (नावां)	(अनुपस्थित)	
	श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा)	(अनुपस्थित)	
155.	श्री विद्याशंकर नन्दवाना (पीपल्दा)	शपथ	हिन्दी
156.	श्री विश्वनाथ (खाजूवाला)	शपथ	हिन्दी
	श्री विश्वेन्द्र सिंह (डीग-कुम्हेर)	(अनुपस्थित)	
157.	श्री शंकर लाल शर्मा (दौसा)	शपथ	हिन्दी
158.	श्री शंकर सिंह (ब्यावर):	शपथ	हिन्दी
159.	श्री शंकरसिंह राजपुरोहित (आहौर)	शपथ	संस्कृत
160.	श्रीमती शकुन्तला रावत (बानसूर):	शपथ	हिन्दी
161.	श्री शत्रुघ्न गौतम (केकड़ी)	शपथ	हिन्दी
162.	श्रीमती शिमला बावरी (अनूपगढ़)	शपथ	हिन्दी
163.	श्री शुभकरण चौधरी (उदयपुरवाटी)	शपथ	हिन्दी
164.	श्री शैतानसिंह (पोकरण)	शपथ	संस्कृत
165.	श्री श्रीचन्द कृपलानी (निम्बाहेड़ा)	शपथ	संस्कृत
166.	श्री श्रीराम भींचर (मकराना)	शपथ	हिन्दी
167.	श्रीमती संजना आगरी (सोजत)	शपथ	हिन्दी
168.	श्री संजीव कुमार (भादरा)	शपथ	हिन्दी
169.	श्रीमती संतोष अहलावत (सूरजगढ़)	शपथ	हिन्दी
170.	श्री समाराम गरासिया (पिण्डवाड़ा-आबू)	शपथ	हिन्दी
171.	सुश्री सिद्धी कुमारी (बीकानेर पूर्व)	शपथ	हिन्दी
172.	श्री सुखराम विश्नोई (सांचौर)	शपथ	हिन्दी
173.	श्री सुखाराम (मेड़ता)	शपथ	हिन्दी
174.	श्री सुरेन्द्र गोयल (जैतारण)	शपथ	हिन्दी

क्र.सं.	सदस्य का नाम	शपथ/प्रतिज्ञान	भाषा
175.	श्री सुरेन्द्र पारीक (हवामहल)	शपथ	हिन्दी
176.	श्री सुरेन्द्र पाल सिंह (करणपुर)	शपथ	हिन्दी
177.	श्री सुरेन्द्र सिंह राठौड़ (कुम्भलगढ़)	शपथ	हिन्दी
178.	श्री सुरेश धाकड़ (बेगूं)	शपथ	संस्कृत
179.	श्री सुरेश सिंह रावत (पुष्कर)	शपथ	हिन्दी
180.	श्रीमती सुशील कंवर (मसूदा)	शपथ	हिन्दी
181.	श्री सुशील कटारा (चौरासी)	शपथ	हिन्दी
182.	श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास (सूरसागर)	शपथ	हिन्दी
183.	श्रीमती सोनादेवी (रायसिंहनगर)	शपथ	हिन्दी
184.	श्री हनुमान बेनीवाल (खींवसर)	शपथ	हिन्दी
185.	श्री हबीबुर्रहमान अशरफी लाम्बा (नागौर)	शपथ	उर्दू
186.	श्री हमीरसिंह भायल (सिवाना)	शपथ	हिन्दी
187.	श्री हरिसिंह रावत (भीम)	शपथ	हिन्दी
188.	श्री हीरा लाल दरांगी (झाड़ोल)	शपथ	हिन्दी
189.	श्री हीरालाल (निवाई)	शपथ	संस्कृत
190.	श्री हीरालाल नागर (सांगोद)	शपथ	हिन्दी
	श्री कुंजीलाल (बामनवास)	(अनुपस्थित)	
	श्री बी. एल. कुशवाह (धौलपुर)	(अनुपस्थित)	
	श्री भंवरलाल (सरदारशहर)	(अनुपस्थित)	
	म. रणधीर सिंह भीण्डर (वल्लभनगर)	(अनुपस्थित)	
191.	श्रीमती रानी सिलौटिया (बसेड़ी)	शपथ	हिन्दी
192.	श्री रामेश्वर लाल डूडी (नोखा)	शपथ	हिन्दी
193.	श्री विजय सिंह (नावां)	शपथ	हिन्दी
194.	श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा)	शपथ	संस्कृत
	श्री विश्वेन्द्र सिंह (डीग-कुम्हेर)	(अनुपस्थित)	

अध्यक्ष का निर्वाचन

कैलाश चन्द्र मेघवाल, श्री, सदस्य, का अध्यक्ष के रूप में निर्वाचन

श्री अध्यक्ष: अध्यक्ष का निर्वाचन। श्रीमती वसुन्धरा राजे, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-156) प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगी।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से निम्नांकित प्रस्ताव प्रस्तुत करती हूं कि ''श्री कैलाश चन्द्र मेघवाल, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-37) को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।''

श्री अध्यक्ष: श्री रामेश्वरलाल डूडी, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-151) अनुमोदन करेंगे।

श्री रामेश्वर लाल डूडी (नोखा): अध्यक्ष महोदय, मैं उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

श्री अध्यक्ष: श्री गुलाब चन्द कटारिया, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-46) प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

श्री गुलाबचन्द कटारिया (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से निम्नांकित प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं, ''श्री कैलाश चन्द्र मेघवाल, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-37) को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।''

श्री अध्यक्ष: श्री अशोक गहलोत, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-16) प्रस्ताव का अनुमोदन करेंगे।

श्री अशोक गहलोत (सरदारपुरा): अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

श्री अध्यक्ष: श्री नन्दलाल मीणा, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-81) प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

श्री नन्दलाल मीणा (जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से निम्नांकित प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं, ''श्री कैलाश चन्द्र मेघवाल, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-37) को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।''

श्री अध्यक्ष: श्री नारायण सिंह, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-88) प्रस्ताव का अनुमोदन करेंगे।

श्री नारायण सिंह (दांतारामगढ़): अध्यक्ष महोदय, मैं उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

श्री अध्यक्ष: प्रश्न यह है कि जो प्रस्ताव श्रीमती वसुन्धरा राजे, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या 156) ने प्रस्तुत किया है और जिसका अनुमोदन श्री रामेश्वरलाल डूडी, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या 151) ने किया है, स्वीकार किया जाए?

(स्वीकृत)

श्री कैलाश चन्द्र मेघवाल, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या 37) सर्वसम्मति से राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

(11.50 बजे)

(श्री कैलाश चन्द्र मेघवाल, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा (लक्ष्मणगढ़): आप परिचित हैं, उसी प्रकार से अब भी पांच साल आप परिचय देते रहेंगे और चाहे हम कम हैं लेकिन हमारी सही बात को आप प्रोटेक्ट करेंगे, यह हम आपसे उम्मीद करते हैं। और पांच साल पहले जिस तरीके से आप निर्भीकता से अपनी बात कहते रहे हैं, मैं उम्मीद करता हूं, कहते रहेंगे।

बधाई एवं आभार

कैलाश चन्द्र मेघवाल, श्री, सदस्य, के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मत निर्वाचन पर बधाई

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं आपको विधान सभा के गरिमामय अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से चुने जाने पर हार्दिक बधाई देती हूं। सदन में शुरू से चली आ रही परम्परा के अनुसार अध्यक्ष का पद सर्वसम्मति से निर्वाचित होता आया है और मुझे खुशी है कि इस बार भी आप सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये हैं, और इसके लिए आपको बहुत-बहुत विशेष बधाई।

विधान सभा और लोक सभा का लम्बा अनुभव रहा है आपको और इसीलिए आपको संसदीय पद्धति का भी बहुत अच्छा ज्ञान है। इस पद पर बैठने वाले का पद न केवल गरिमामय होता है, अध्यक्ष महोदय, बल्कि गौरवशाली परम्पराओं का निर्वहन करने वाला भी होता है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि आप अपने सरल, सौम्य बुद्धि-चातुर्य ओर आपके प्रभावित करने

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

वाले व्यक्तित्व से सभी माननीय सदस्यों के साथ पूरा न्याय करेंगे। यह सदन लोकतंत्र का रथ है और आप हैं उसके सारथी। लोकतंत्र रूपी इस रथ में पक्ष और विपक्ष दो पहिये हैं, इन दोनों पहियों में संतुलन बनाये रखने का एक बहुत बड़ा काम है जो आपको करना है। महोदय, आप जानते हैं कि विधान सभा का यह पवित्र भवन सिर्फ ईंट, गारे और पत्थर का नहीं, प्रदेश के करोड़ों लोगों की भावनाओं का एक बहुत बड़ा मंदिर है। यहां बोले जाने वाला हर शब्द पवित्र और अटल सत्य होना चाहिए। यहां की प्रतिध्वनि सिर्फ इसी सदन में नहीं, पर देश और दुनिया में भी सुनी जाती है इसलिए हम सब का ध्येय सदन की गरिमा बनाये रखने का है। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहती हूं कि हम सब पक्ष और प्रतिपक्ष मिलकर जनता के विश्वास पर खरा उतर कर लोकतंत्र की परम्पराओं को मजबूत करेंगे। इस सदन के गौरवशाली इतिहास को बनाये रखने का पूरा प्रयास करेंगे। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन को पूरा विश्वास दिलाना चाहती हूं कि प्रदेश के विकास में न कोई पक्ष है और न कोई प्रतिपक्ष, हमको सबको जनता ने चुनकर यहां भेजा है, हम सब मिल कर राजस्थान के नव निर्माण के लिए खुले दिल से संवाद कर अपना योगदान देंगे। राजस्थान के विकास के लिए जहां-जहां प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों ने कभी भी विचार-विमर्श करने की आवश्यकता महसूस की तो हम निश्चित रूप से उनसे मिल बात करके करेंगे। मैं उम्मीद करती हूं कि लोकतांत्रिक मूल्यों को कायम रखने और प्रजातांत्रिक ढांचे को और मजबूत करने में आपकी भूमिका उपयोगी साबित होगी ही होगी और आपके कार्यकाल में यह सदन नई ऊंचाइयों को छुएगा। आपको फिर मैं बहुत सारी शुभकामनाएं, बहुत-बहुत सारी बधाई देकर अपनी बात को विराम देती हूं।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): अध्यक्ष महोदय, आपके निर्वाचन के साथ ही इस राजस्थान विधान सभा के गौरवशाली इतिहास में एक और अध्याय जुड़ गया है। अध्यक्ष महोदय, आपके जैसे अनुभवी, आपके जैसे विद्वान और आपके जैसे संविधान को जानने वाला व्यक्तित्व आज इस सर्वोच्च आसन पर विराजमान है। अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि संसदीय क्षेत्र में आपका जो परिपूर्णता लिये हुए ज्ञान है, उसका लाभ हम सब लोगों को मिलेगा। अध्यक्ष महोदय, कल तक आप भारतीय जनता पार्टी के विधायक दल में राज्य सरकार के मंत्री के रूप में हमारा मार्गदर्शन कर रहे थे, आज सर्वसम्मत निर्वाचन के साथ ही, अध्यक्ष महोदय, आपकी भूमिका बदल

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

गई। अब आपकी भूमिका हमारे संरक्षक के तौर पर है। मैं समझता हूं, अध्यक्ष महोदय, 30 वर्षों से ज्यादा सार्वजनिक अनुभव रहा है आपके पास, एक पक्ष के विधायक के रूप में, एक प्रतिपक्ष के विधायक के रूप में, एक राज्य सरकार के मंत्री के रूप में और केन्द्रीय सरकार के मंत्री के रूप में बड़ा अनुभव है।

अध्यक्ष महोदय, इसके साथ साथ, आप विधिवेत्ता भी हैं, आप वकील हैं, इसके कारण से भी हमारे संवैधानिक प्रावधानों के बारे में आपको जो ज्ञान है, संसदीय प्रणाली और प्रक्रियाओं के बारे में आपका जो ज्ञान है, मैं समझता हूं कि हमारे सब का मार्गदर्शन वह ज्ञान करेगा। अध्यक्ष महोदय, जिस आसन पर आप सुशोभित हैं, यह आसन आप जैसे विद्वान व्यक्ति से आज सुशोभित हुआ है। आपके नेतृत्व में हम सब लोग मिल कर इस सदन में जो बैठे हैं, सुराज का संकल्प लेकर एक ऐसा राजस्थान बनाएंगे जिसमें हम सब की भूमिका होगी। आपके संरक्षण के अन्दर यह राजस्थान की विधान सभा उन्हीं ऊंचाईयों को छुएगी क्योंकि, अध्यक्ष महोदय, आपके संसदीय जीवन का लालन पालन उस व्यक्तित्व के नीचे हुआ है, जिस व्यक्तित्व के नीचे हमारे सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री जी का भी हुआ, भैरोंसिंह जी शेखावत को इस हिन्दुस्तान के संसदीय इतिहास में कभी कोई भूल नहीं सकता, उन्होंने जैसा योगदान दिया, इसी विधान सभा से निकल कर वे देश के सर्वोच्च पद उप राष्ट्रपति पद पर पहुंचे, मैं समझता हूं, चूंकि आपको अनुभव से प्राप्त हुआ ज्ञान है वह अनुभव जब आप बांटेंगे तो हम सब लोग आपके मार्गदर्शन में राजस्थान को आगे बढ़ाने में और विधान सभा के इतिहास को और ऊंचा करने में अपना योगदान देंगे।

अध्यक्ष महोदय, यह विक्रमादित्य का आसन है, इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई, आपके नेतृत्व में यह विधान सभा और ऊंचाइयों पर जाएगी। बहुत-बहुत शुभकामना, अध्यक्ष महोदय।

श्री रामेश्वर लाल डूडी (नोखा): अध्यक्ष महोदय, मैं इस विपक्ष की तरफ से आपको बहुत बहुत बधाई देना चाहूंगा। हमको सदन की परम्पराएं चालू रखते हुए आपका एक बहुत ही अच्छी सोच के साथ में चयन हुआ, हम भी आशा यह रखते हैं आपसे कि आप निष्पक्ष सदन को चलाएंगे और एक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण तैयार करके हम लोगों की भावनाओं और लोगों से जुड़ी

(श्री रामेश्वर लाल डूडी)

हुई उम्मीदों को अच्छे तरीके से सोच कर निष्पक्ष रूप से न्याय देंगे। क्योंकि हमारी संख्या कम हो सकती है लेकिन हम 19 से 20 भी कम नहीं हैं, हम 21 हैं। सामने जो हमारे सदन बैठा है, आपकी सरकार बैठी है, पक्ष बैठा है, उसमें मीडिया के द्वारा हमेशा कहा जाता है कि 21 मैम्बर हैं कैसे उनको फेस करोगे? (व्यवधान) अभी आप ऐसा करने लगे तो फिर कैसे हाउस चलाओगे? इसलिए मेरा निवेदन, अध्यक्ष जी, यह है कि हम जनता से जुड़े हुए उम्मीद रखेंगे तो आपसे निष्पक्ष रूप से न्याय की आशा हम लोग करते हैं। अभी राठौड़ साहब ने और वसुंधरा जी ने जो बताया, पोलिटिकली पक्ष और विपक्ष दोनों चलकर उस हिसाब से नई आशा हम रखते हैं। सदन में अभी राठौड़ साहब ने बताया कि सदन उन ऊंचाइयों पर जाए, ऊंचाइयों पर तभी जा सकता है, जब आप इस आसन पर बहुत ही बड़े आसन पर अध्यक्ष के रूप में बैठे हैं तो एक निष्पक्ष न्याय इस सदन में मिले। हम यह पूरी आशा और विश्वास आपसे रखते हैं क्योंकि आपको राजनीति में बहुत तजुर्बा रहा है, राठौड़ साहब ने पूरी आपकी जीवनी के बारे में बताया तो हम लोग पूरी आशा और विश्वास आपसे रखते हैं कि आप निष्पक्ष होकर सदन में एक अच्छा सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार करें। धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष: बोलिए।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): अध्यक्ष महोदय, आपके निर्वाचन से हमारे संविधान निर्माताओं ने जो एक बात सोची थी, वह आज स्पष्ट रूप से साकार दिखाई दे रही है। नरोत्तमजी से लेकर इस पद पर कितने बड़े बड़े आदमी आरूढ़ रहे, आज उसी शृंखला में आपका आरुढ़ होना, हमारे लोकतंत्र की सफलता का परिचायक है। अध्यक्ष महोदय, ज्यादा लम्बी तो बात नहीं कहूंगा लेकिन अभी माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी ने भी कहा, माननीय सदन के नेता ने भी कही, उसको दो श्लोको में कहना चाहूंगा

शशिना च निशा निशया च शशी।
शशिना निशया च विभाति नभ:।।
पयसा कमलं कमलेन पय: ।
पयसा कमलेन विभाति सर:।।

(12.00 बजे)

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

यह आपकी ड्यूटी है। चन्द्रमा से रात्रि और रात्रि से चन्द्रमा और दोनों से मिलकर आकाश की शोभा होती है। तो पक्ष और विपक्ष, इनसे मिलकर आसन की शोभा बढ़ती है। इसलिए आप आकाश की तरह से हो जो दोनों को प्रभावित करेंगे। ''पयसा कमलं कमलेन पय: पयसा कमलेन विभाति सर:।।'' कमल से पानी की, सरोवर की और सरोवर से कमल की और पानी और कमल दोनों से मिलकर सरोवर की शोभा होती है। इधर कमल है, इधर पानी है और आप सरोवर के रूप में हो, तो सारे सरोवर की आप शोभा बढाएं, यही आपसे प्रार्थना है। बहुत-बहुत बधाई, बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

श्रीमती कामिनी जिन्दल (गंगानगर): अध्यक्ष महोदय, मैं आपको शुभकामना देना चाहती हूं। आप हमारे सारथी हैं और आपके मार्गदर्शन में मैं यह आशा करती हूं कि हम सब मिलकर एक अच्छे और सुन्दर राजस्थान का निर्माण करेंगे। धन्यवाद।

श्री हनुमान बेनीवाल (खींवसर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बधाई देना चाहता हूं। साथ ही, नेता, प्रतिपक्ष ने जो बात कही थी कि आपसे पूरे राजस्थान को उम्मीद है, आप ग्रामीण परिवेश से हैं और हमेशा आपने सच्ची बात कही है उसी तरह से विधान सभा में पक्ष-विपक्ष में भेद नहीं रखते हुए हमारे राजस्थान के किसानों की, राजस्थान के जवानों की जो भी समस्या है, उसमें आप न्याय करेंगे और अपनी पुरानी स्टाइल के अन्दर जिसमें आप राजस्थान के अन्दर जाने जाते हैं, उसी मजबूती के साथ आप यहां पूरी मजबूती दिखाएंगे। धन्यवाद।

श्रीमती शकुन्तला रावत (बानसूर): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं आपको निर्वाचित होने पर अपनी तरफ से बहुत-बहुत बधाई देती हूं। मैं आशा रखती हूं कि जो भी हमारे मुद्दे होंगे, महिलाओं के हों, युवाओं के हों, जो हम रखेंगे उनमें आप निष्पक्षता से पक्ष लेंगे और सही को सही ठहराएंगे। मैं इतना ही कहना चाहती हूं। और यही आपको कहूंगी कि जो आपका पद है वह गरिमामय है। जैसे वर्षा ऋतु होती है तो सारी फसलें उसके लिए तरसती हैं। जब तक बारिश नहीं हो, लहलाती हुई फसलें बारिश के बिना अधूरी रहती हैं। इसलिए जन-प्रतिनिधि की भावनाएं आप पर टिकी हुई हैं और जब आप उस पर निर्णय लेंगे तो ही पूरी होंगी। आपको पुन: बहुत-बहुत बधाई। धन्यवाद।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे आपको जानने का पिछले 36 साल से सौभाग्य रहा है, जब आप 1977 में पहली बार मंत्री बने थे तब से ही मैं काबिलियत का कायल था और आपको बाहर भी यह बात कहता था। आप बहुत हंसमुख हैं, मिलनसार हैं। इस वक्त आप काफी गम्भीर लग रहे हैं इसलिए कृपया आप थोड़ा सा हंसें तो सही।

श्री अध्यक्ष: कोई हंसी जैसी बात आप कहिये तो हंस लेंगे।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): अध्यक्ष महोदय, आपका बोझ हल्का हुआ है, भारी नहीं हुआ है। इसलिए आप हंसिये थोड़ा-सा।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आपका हमेशा जिस प्रकार से सब के साथ हंसमुख व्यवहार रहा है, उसी सरल व्यवहार को, हंसमुख व्यवहार को आप रखेंगे। हमारी संख्या भले ही कम है, उसका आप निश्चित रूप से ध्यान रखेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि पूरे विपक्ष को जिसकी संख्या कुल 37 है, आपका संरक्षण मिलेगा जिससे हम अपने दायित्व का निर्वहन भली प्रकार से कर सकेंगे। धन्यवाद।

श्री मनोज कुमार (सादुलपुर): माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आपको इस पद के लिए बड़ी शुभकामनाएं देते हैं और पूरी आशा और विश्वास भी रखते हैं कि सदन में पक्ष और विपक्ष की जो बातें हैं, उनमें बड़ा ही न्यायप्रिय निर्णय आप करें। राजस्थान के हित की जहां बात है, उसके लिए आप पूर्णतया पक्ष और विपक्ष दोनों में तालमेल के साथ निर्णय करें। धन्यवाद।

श्री ओम बिरला (कोटा दक्षिण): माननीय अध्यक्ष महोदय, आज सदन में 14वीं विधान सभा में अध्यक्ष के रूप में आपका निर्वाचन हुआ.....

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): मतलब चौदहवीं का चांद।

श्री ओम बिरला (कोटा दक्षिण): हां। मैं मेरी ओर से आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आपका इस राजस्थान की राजनीति में बहुत लम्बा अनुभव रहा है-लोक सभा से लेकर विधान सभा तक मंत्री के रूप में भी अनुभव रहा है और एक सदस्य के रूप में भी अनुभव रहा है। सत्ता में भी अनुभव रहा है, विपक्ष में भी अनुभव रहा है। आपने सत्ता पक्ष और विपक्ष की भूमिकाएं देखी हैं। जिस तरीके से राजस्थान की जनता ने बहुमत दिया है और जिस तरीके का निर्णय आज इस राजस्थान की विधान सभा में अध्यक्ष के रूप में आपका हुआ है, यह भी अपने आप में ऐतिहासिक निर्णय है। निश्चित रूप से विधायी कार्यों में आपका अनुभव है, सम्पूर्ण सदन के माध्यम से जो बातें

(श्री ओम बिरला)

एक विधायक के रूप में हम कहेंगे, निश्चित रूप से अध्यक्ष के रूप में आप संरक्षण भी करेंगे और समय-समय पर राजस्थान के हितों का संरक्षण करते हुए एक नया इतिहास राजस्थान की विधान सभा का बनाएंगे। आज भी देश के अन्दर, संसदीय लोकतंत्र के अन्दर सबसे बड़ा इतिहास राजस्थान विधान सभा का रहा है और आज फिर नया इतिहास बनेगा। आपको बहुत-बहुत शुभकामना, बहुत-बहुत बधाई।

श्री सुरेन्द्र गोयल (जैतारण): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं। जैसा आपका व्यक्तित्व है कि जल की तरह आप शीतल हैं, हवा की तरह गतिशील हैं, अग्नि की तरह बहुत तापवान हैं, समुद्र की तरह आप गम्भीर हैं और आकाश की तरह आपका विशाल ह्रदय है।

श्री अध्यक्ष: बस अब और ज्यादा नहीं।

श्री सुरेन्द्र गोयल (जैतारण): सदन को आप इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए चलाएंगे। बहुत-बहुत शुभकामना।

श्री रामचन्द्र (डग): माननीय अध्यक्ष जी, आपका अध्यक्ष बनने पर हार्दिक अभिनन्दन करता हूं, वन्दन करता हूं, नमन करता हूं। आप जैसे अध्यक्ष बने हैं, दलित समाज से हैं, आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। राजस्थान से अभी 34 विधायक नये चुने हैं, हम नये हैं, आप हम पर आशीर्वाद रखना और हम सब का पूरे राजस्थान में साथ देना। एक चौपाई के साथ – ''राज-धरम सरबसु एतनोई। जिमि मन मांह मनोरथ गोई।।'' ऐसा भाव रखते हुए आप हमें आशीर्वाद देंगे। धन्यवाद।

श्री शुभकरण चौधरी (उदयपुरवाटी): अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम तो मैं आपको इस सदन के सर्वोच्च आसन पर आरुढ़ होने पर शुभकामना देना चाहता हूं। आप सरस्वती के उपासक हैं, मां सरस्वती के चार निशान हैं जिनमें लिखा है और आपने देखा है कि हंस उनका वाहन है। हमने सुना है कि हंस एक ऐसा पक्षी है जो दूध और पानी मिला देने के बाद अगर उसमें चोंच दे दे तो पानी अलग और दूध अलग हो जाता है। मां सरस्वती कहती है कि मेरा सच्चा उपासक वही है जो इस प्रकार का न्याय करे कि दूध का दूध और पानी का पानी कर दे। मैं भी आपसे निवेदन करूंगा कि इस सदन में आप भी हंस की चोंच की तरह इस प्रकार का न्याय करें कि मां सरस्वती को भी आप पर गर्व हो और पूरे सदन को भी आप पर गर्व हो कि आप दूध का दूध और पानी का पानी कर दें। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री अध्यक्ष: आप बोल रहे हैं? फिर बधाइयां बहुत ज्यादा हो जाएंगी।

श्री पूरणमल सैनी (खेतड़ी): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको सदन में गरिमामय पद पर सुशोभित होने के लिए बधाई देते हुए हर्ष हो रहा है। और उसके साथ सोच रहा हूं कि भारत के संविधान के निर्माताओं की दलित, शोषित और पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए जो सोच थी, उसको आप निश्चित रूप से ही अमली जामा पहनाएंगे। ऐसा सोच रखते हुए हम सब की ओर से आपका अभिनन्दन, धन्यवाद। जय भीम।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कैलाश चन्द्र मेघवाल का आभार

श्री अध्यक्ष: नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ आप सबको मेरा विनम्र प्रणाम। सदन की माननीय नेता और मुख्य मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे जी, प्रतिपक्ष के माननीय नेता श्री रामेश्वर जी डूडी, संसदीय कार्य मंत्री श्री राजेन्द्र राठौड़ एवं अन्य माननीय सदस्यों द्वारा इस आसन के ग्रहण करने के अवसर पर बधाइयों के साथ-साथ सदन के संचालन में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया गया है, उसका मैं हृदय से स्वागत करता हूं। 14वीं राजस्थान विधान सभा में जन प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित होकर आने पर मैं आप सबका भी हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

माननीय सदस्यगण, हमारे इस सदन की महान परम्परा रही है कि स्पीकर का चुनाव निर्विरोध किया जाए। इस सुविचारित परम्परा के अनुसार आपने, सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष, दोनों ने ही सर्वसम्मति से मेरा निर्वाचन कर यह गुरुत्तर दायित्व मुझे सौंपा है, उसका मैं हृदय से आभारी हूं।

माननीय सदस्यगण, सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर एक ओर जहां मेरे लिए मेरे राजनैतिक सफर की एक विशिष्ट उपलब्धि है, वहीं दूसरी ओर मेरे लिए गौरव और संतोष का विषय भी है कि आप सभी ने मुझे इस पद के योग्य माना। विशेष रूप से सदन की नेता द्वारा पहल से ऐसा सम्भव हो सका, अत: मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूं।

माननीय सदस्यगण, हमने अपना लोकतांत्रिक ढांचा ब्रिटेन से अपनाया है और वहां पर निचले सदन यानी हाउस आफ कामंस के अध्यक्ष को स्पीकर सम्बोधित किया जाता है। इसके साथ ही वहां पर एक उक्ति प्रचलित है कि ‘‘The Speaker is one who speaks minimum.” यह बात मैं आपके सामने इसलिए रख रहा हूं कि इस विषय पर आप हम सब अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे तो सदन के सुचारु संचालन में हमको बहुत सुविधा होगी। माननीय

(श्री अध्यक्ष)

सदस्यगण, इस उक्ति का इस सदन के कार्य संचालन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। सदन में सत्ताधारी पार्टी व प्रतिपक्ष के सभी सदस्यों को किसी न किसी रूप में अपने विचार रखने का अवसर मिलता है जबकि स्पीकर अपनी पार्टी से त्यागपत्र देकर, दलीय पद्धति से ऊपर उठ जाने के कारण सदन में होने वाली बहस या वादविवाद में अपनी राजनैतिक विचारधारा की छाया नहीं होने देता है। आप अपने विचार रखें, विचार रखते समय सदन संचालन की प्रक्रिया, नियम-उप नियम, परम्पराओं एवं दिशानिर्देशों का ठीक-ठीक पालन करते हैं तो आसन की ओर से सामान्यत: हस्तक्षेप नहीं किया जाता है। इसकी अवहेलना या पालना नहीं होने पर ही स्पीकर हस्तक्षेप करने को बाध्य होता है। इसीलिए कहा गया है कि "The Speaker is one who speaks minimum."

माननीय सदस्यगण, पौने सात करोड़ की आबादी वाला राजस्थान एक नई करवट लेने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यहां अलग-अलग भौगोलिक परिस्थितियों वाले भू-भाग हैं। रहन-सहन, बोलचाल-भाषा एवं जीवन पद्धति की भिन्नताएं हैं। प्रगति व विकास की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए इस सदन की ओर सारा राजस्थान देख रहा है। कई तरह की अपेक्षाएं, आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आशान्वित हैं। यह सदन इन अपेक्षाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति का साधन बने, यह हमारा लक्ष्य एवं सोच होना चाहिए।

माननीय सदस्यगण, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं में एक उक्ति है, "Party in power must have its way and party in opposition must have its say." यहां पर कई प्रकार की आशंकाएं प्रकट की गई हैं कि प्रतिपक्ष संख्या में कम हैं लेकिन उनको बोलने का पूरा अधिकार दिया जाना चाहिए और पार्टी जो सत्ता में हो, उसको काम करने के लिए यहां पर अवसर दिया जाना चाहिए, यह इसका मानना है। मेरा मानना है कि इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन सदन के संचालन में अपनाया जाना चाहिए।

माननीय सदस्यगण, मैं इस अवसर पर पिछली विधान सभाओं के विवादित कार्य प्रणाली, नियमों की अवहेलना अथवा अव्यवस्था के प्रकरणों के बारे में कोई टिप्पणी नहीं करना चाहूंगा। मेरा मानना है कि "Experience is the best teacher." अनुभव सबसे बड़ी शिक्षा होती है। हम अपने पिछले अनुभवों से शिक्षा लेकर इस सदन का संचालन अच्छे और सुचारु रूप से करें, यह हम सभी के ध्यान में रखने योग्य बात है।

(श्री अध्यक्ष)

विधान सभा द्वारा वितरित साहित्य का आप ध्यानपूर्वक अध्ययन करेंगे और विधान सभा में उसके अनुरूप अपने आचरण का पालन करेंगे तो सदन की कार्यवाही में आप अपनी सार्थक भूमिका निभा पाएंगे।

माननीय सदस्यगण, हमारी यह विधान सभा 14वीं विधान सभा है, इससे पूर्व 13 विधान सभाएं गठित हुई हैं और उनके स्पीकर के रूप में 15 राजनेताओं ने अध्यक्ष पद का उत्तरदायित्व निभाया है। वे सभी हमारी राजनीति के विभिन्न पार्टियों के विद्वान, अनुभवी व कद्दावर राजनेता रहे हैं। उनके द्वारा विधान सभा संचालन की पूरी जानकारी और दिये गये दिशा-निर्देशों का ज्ञान इस साहित्य से आपको प्राप्त हो जाएगा। उनका योगदान हमारे सबके लिए प्रेरणादायक व भविष्य के मार्गदर्शक के रूप में सदैव प्राप्त है।

माननीय सदस्यगण, हमारा लोकतंत्र समय के साथ-साथ निरन्तर परिपक्व होता जा रहा है। मतदाताओं की जागरूकता बढ़ी है और आप सभी ने चुनावों के दौरान अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र में इस स्थिति का अनुभव भी किया है। आप कितने संघर्षपूर्ण चुनाव अभियान से इस सदन में पहुंचे हैं, यह आपके लिए याद रखने की बात होनी चाहिए। आप द्वारा सदन में उठाये जाने वाले मुद्दे, वाद-विवाद, डिबेट या बहस के विषय ऐसे होने चाहिए जो राजस्थान के सभी क्षेत्रों में सामने आ रही चुनौतियों का समाधान कर सकें।

माननीय सदस्यगण, आपको यह तथ्य विशेष रूप से सदैव ध्यान रखना समुचित होगा कि "If you don't agree with me, agree to disagree." यह एक ऐसा विषय है, जब हम बहस करते हैं तो अपनी बात को ही सही मानकर ज्यादा से ज्यादा उस पर ध्यान देना और उस पर जमे रहना, यह बहस का मुद्दा नहीं होता है। If you don't agree with me, agree to disagree," उससे अपने वाद-विवाद को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। इस ध्येय वाक्य से वाद-विवाद या डिबेट या बहस से किसी भी प्रकार कटुता या मनोमालिन्य की सम्भावना नहीं रहेगी।

इस अवसर पर प्रोटेम स्पीकर श्री प्रद्युम्न सिंह जी एवं उनके सहयोगी सभापति श्री सुन्दर लाल, श्री नारायण सिंह और श्री घनश्याम तिवाड़ी को भी धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने कल और आज अत्यन्त गरिमापूर्ण तरीके से सदन का संचालन किया।

राजस्थान विधान सभा सचिवालय एक दक्ष संगठन के रूप में जाना

(श्री अध्यक्ष)

जाता है और विशेष अवसरों पर अपनी कर्तव्यनिष्ठा के लिए विख्यात है। मुझे विश्वास है कि इस सदन के सुचारु रूप से संचालन में मुझे इस सचिवालय के अधिकारियों और कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इसके साथ ही जो विविध कमेटियां हैं, विविध कार्यक्रम हैं, उनमें हमारे यहां के बहुत ही दक्षतापूर्ण, योग्य और विद्वान कर्मचारी हैं, उनसे आपको भी सहयोग मिलता रहेगा।

माननीय सदस्यगण, अभी जैसा कहा गया कि अनुभव लम्बा है, उस अनुभव में से आज केवल तीन बातों की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। प्रश्नकाल को स्थगित करने की मांग यदा-कदा उठ जाती है। मेरा यह मानना है कि प्रश्नकाल सबसे महत्वपूर्ण काल होता है और उस प्रश्नकाल को अगर स्थगित कराया जाता है तो एक घंटे में फर्क क्या पड़ता है? जो चीज आप 11 बजे कहते हो, प्रश्नकाल को स्थगित करके कहना चाहते हो, वही चीज 12 बजे आप वैसे भी कह सकते हो। यह सदन का प्रश्नकाल एक बहुत महत्वपूर्ण है, उसमें सारे राजस्थान की जानकारियां आती हैं। सारे विधायकों द्वारा प्रश्न तैयार किये जाते हैं और उनका उत्तर लेने की जो अपेक्षा है, वह मर जाती है। तो मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रवृत्ति पर हम दोनों तरफ से सोचें। वैसे इस बार प्रतिपक्ष की जिस तरह की संख्या है, उसमें स्थगन कम आने की स्थिति है, लेकिन मैं आपसे निवेदन करता हूं कि प्रश्नकाल आप कभी स्थगित मत करवाइये। प्रश्नकाल में जितनी जानकारियां आ सकती हैं, वे जानकारियां बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं और विधायकों की की हुई मेहनत का प्रतिफल होती है।

दूसरा जो आजकल देखने में आया है वह है कुए में कूदने की प्रवृत्ति। कुए में कूद जाते हैं, वैल में आ जाते हैं। यह कुए में कूदने की प्रवृत्ति कई बार कारगर भी होती है, लेकिन अब धीरे-धीरे जिस तरह से कुए में कूदने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, इससे इसका महत्व भी खतम होता जा रहा है और सदन के संचालन में भी बाधाएं आती जा रही हैं।

तीसरा, वाकआउट। मैं इसको भी यह मानता हूं कि वाकआउट हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली का बहुत महत्वपूर्ण हथियार है, लेकिन उस वाकआउट को हम बार-बार, हर समय, किसी छोटे बिन्दु पर भी प्रयोग करने लग जाते हैं। तो मैं यह मानता हूं कि यह वाकआउट की प्रवृत्ति आपको गरिमा नहीं प्रदान कर रही है।

(श्री अध्यक्ष)

इन सब बातों को लेकर मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि हमारी बहुसंख्या है सत्ता पक्ष की; मेरी नहीं है, भूल से मैं हमारी बोल गया, क्षमा चाहता हूं। मैं सत्ता पक्ष से, शायद कल, मुझे भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता से इस्तीफा देने का निर्देश हो गया है और मैं कल दे दूंगा। उसके बाद सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों मेरे लिए समान पाएंगे। और मैं यहां यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि प्रतिपक्ष जिस संख्या में यहां आया है, वे अपने आपको संख्या के आधार पर कम महत्वपूर्ण नहीं मानें। मैं अध्यक्ष के रूप में उनके सारे अधिकारों का संरक्षण करूंगा और यह जो विशाल बहुमत आया है, उस विशाल बहुमत के आगे उनको किसी तरह की दबने या दबाने की व्यवस्था नहीं रहेगी।

आज बहुत आवश्यक है, हम लोकतांत्रिक प्रणाली को इस तरह से चलाएं क्योंकि सारे राजस्थान की निगाहें हैं हमारे पर। यह सदन कुछ ऐसे निर्णय ले कि राजस्थान में जो चुनौतियां हैं, यद्यपि बहुत लम्बे समय से, पैंसठ साल, छियासठ साल हो गये आजादी को प्राप्त किये लेकिन उस आजादी के बाद इतना अरसा गुजर जाने के बाद इस देश में और राजस्थान में गरीबी आज भी जिस तरह से है और जिस तरह गरीब आज दुःखी हैं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियां जिस तरह से दुःखी है, किसान और मजदूर जिस तरह से दुःखी हैं, वह हमारे सब के लिए एक चुनौती है। उन चुनौतियों को स्वीकार करने में हमको सदैव तत्पर रहना चाहिए और इस सदन को उन चुनौतियों का समाधान ढूंढने में एक औजार के रूप में काम में लेना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब आप और हम सब एक मत से एक अच्छे उद्देश्य के लिए, एक सामंजस्य स्थापित करने के लिए इस सदन में अपनी बहस करें।

माननीय सदस्यगण, आपको एक निवेदन करना चाहता हूं, अध्ययन की आदत अवश्य डालिये। अध्ययन की आदत डालेंगे, तो हमारा एक पुस्तकालय है, उस पुस्तकालय में अनेकानेक तरह की पुस्तकें हैं, उनसे पढ़िये। ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, जितना आप अधिक पढ़ेंगे, "knowledge is a vast sea-shore and individuals standing on its bank are only culling bubbles." इस सिद्धांत को मान करके जितना आप अधिक अध्ययन करेंगे, उस अध्ययन के आधार पर यदा-कदा जैसे संस्कृत के विद्वान

(श्री अध्यक्ष)

हमारे तिवाड़ीजी संस्कृत भाषा से कोटेशन ले आते हैं, उसको यहां उद्धृत करते हैं, वह भी एक बात है। तो अलग-अलग इन भाषाओं को पढ़ने से, इन ग्रंथों को पढ़ने से जो आपकी ज्ञान वृद्धि होगी, वह ज्ञान वृद्धि इस सभा के संचालन में भी और आपकी डिबेट, बहस और इसमें भी हमेशा आपको सहयोग करेगी। तो मैं इन्हीं शब्दों के साथ, आगे भी हम कुछ न कुछ बातें करते रहेंगे, आज मैं फिर से आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए, मुझे आपने इस आसन पर आसीन किया है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि किसी विधायक को और किसी भी पक्ष को मेरे से कभी कोई शिकायत नहीं रहेगी। जितनी क्षमता-योग्यता से राजस्थान विधान सभा में भैरोंसिंह जी के नेतृत्व में और माननीय वसुंधरा राजे के नेतृत्व में और दिल्ली में अटलजी के नेतृत्व में, दूसरे के नेतृत्व में जो कुछ हमने सीखा है, समझ पाया है, उसका मैं पूरी तरह प्रयोग करते हुए आप सब को डिबेट में भाग लेने में और व्यवस्था बनाये रखने में हमेशा सहयोग दूंगा और आपकी भावनाओं का आदर करूंगा। किसी तरह की, जैसे चिंता व्यक्त की हमारे रामेश्वरजी ने कि साहब, बिलकुल, स्पीकर को निष्पक्ष रहना है, हर तरह के विचार आने चाहिए, हर तरह का सोच आना चाहिए, उसी में से एक सामूहिक सोच निकलेगा जो राजस्थान की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में हमको मददगार मिलेगा। तो मैं इन्हीं शब्दों के साथ एक बार फिर आप सबका आभारी और कृतज्ञ होते हुए अपनी ओर से धन्यवाद अर्पित करता हूं और आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमेशा आपके विचारों और अधिकारों की रक्षा करूंगा। जय हिन्द, जय भारत।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): अध्यक्ष महोदय, आपका उद्‌बोधन ऐसा लगा कि जैसे चौदहवीं का चांद हो या आफताब हो, जो भी हो तुम खुदा की कसम, लाजवाब हो।

श्री अध्यक्ष: सदन की कार्यवाही कल दिनांक 23.1.2014 के 11.00 बजे के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 12.24 बजे गुरुवार, दिनांक 23 जनवरी, 2014 के 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)